ੴ वाहिगुरु जी की फतहि ॥
188
कालो बाबा फूला सिंघ जी
सिख मिशनरी कालेज (रजि:)
लुधियाना
4

ੴ वाहिगुरू जी की फतह

188

अकाली बाबा फूला सिंघ

प्रकाश्क

सिख मिशनरी कालेज (रजि:)

1051/14, फील्लड गंज, लुधिआना-8

सब आफिस : A-143, फतहि नगर,

नई दिल्ली-18

A

अकाली बाबा फूला सिंघ

अकाली फूला सिंघ जी उन महान् व्यक्तित्वों में से एक थे जिनसे, जो शत्रु हर वर्ष दरिया खैबर, गोमल, बोलन से चढ़ कर हिन्दुस्तान आता था और यहाँ की इज्ज़त-आबरू लूट कर ले जाया करता था, इतना भयभीत हुआ कि उसको इस ओर मुंह करने का साहस ही न रहा।

शत्रु हुए भयभीत

नौशहरे की लड़ाई, जो अकाली जी ने 1823 में लड़ी थी, उसमें से मुल्ला रशीद ने भाग कर जान बचाई थी। मुल्ला रशीद बहुत जोशीला गाज़ी तथा इलाके का प्रसिद्ध मौलवी था। मुल्ला रशीद ने जब खालसा के करारे हाथ देखे तो इतना भयभीत हुआ कि बाकी सारी उम्र उसने सिंघों के विरुद्ध सोचने का नाम तक न लिया। एक बार काबुल दरबार में उसको पूछा गया कि मुल्ला जी, फिर कब जेहाद का नारा लगा कर सिंघों से टक्कर लोगे। तब मुल्लां ने कहा कि सिंघों के साथ, सामने हो कर न लड़ने का इरादा बदल सकता हूँ यदि मुझे कोई इतना लम्बा भाला बना दें कि मैं सीमा पर पहाड़ों की चोटियों पर बैठकर माझे में बैठे सिंघों को मार सकूँ, तब तो गाजी बनने को तैयार हूं, परन्तु यदि कभी आप कहो कि मैदान में **सिंघों के साथ आमने-सामने की लड़ाई करूं, तब यह मेरे से नहीं हो सकता क्योंकि सिंघों को मैदान में सामने देख कर मेरी सात जन्म की होश गुम हो जाती है। फिर अपने पांवों को चूमकर मुल्लां साहिब कहने लगे कि मैं नौशहरे की लड़ाई में से केवल इन पांवों की सहायता से भागकर ज़िंदा बच निकला था, नहीं तो अपने अन्य हज़ारों भाइयों के साथ मैदानि-जंग में मेरा कचूमर हो जाता।**

यह मुल्लां अच्छा चतुर था और विनोदी स्वभाव का होने के कारण बड़े-बड़े रइसों तथा हाकिमों तक इसकी पहुँच थी। एक बार काबुल के दरबार में—वहाँ के हाकिम के साथ—जो पहले पेशावर का गवर्नर रह चुका था, मुल्लां जी की बातचीत हुई। नौशहरे की लड़ाई का वर्णन करते हुए हाकिम ने कहा कि पेशावर का किला बहुत मज़बूत है, यदि यह कभी काबुल में होता तो बहुत कार्य देता। मुल्लां ने हँसते हुए कहा कि इस किले को काबुल पहुँचाना बहुत आसान है। यदि तुम चाहो तो मैं इसका प्रबन्ध कर सकता हूँ। हाकिम ने बड़ी हैरानी से पूछा वह कैसे हो सकता है? तो मुल्लां रशीद ने कहा कि **आप चारों भाई मेरे साथ पेशावर चलो और मैं तुम सब को किले की एक दीवार से, मज़बूत रस्सों से बाँध कर, सामने से एक सिंघ को तुम्हारे पर छोड़ दूँगा। तुम सिंघ को देखते ही घबरा कर भागोगे, जैसा कि तुम आम तौर पर करते हो—तो यह किला बराबर तुम्हारे साथ खिंचता**

हुआ काबुल पहुँच जायेगा। मुल्लां के इस लतीफे को सुन कर दरबारी हँस-हँस कर उल्टे हो गये तो मुल्लां को शाबाश देते हुए कहने लगे कि तुमने अफ़गानों का खूब नक्शा उतारा है।

जन्म

बांग्र क्षेत्र के गांव शीहां के एक साधारण गुरसिंख, भाई ईशर सिंघ, मिसल निशानां के निवास पर आपका जन्म 1761 में हुआ। सन् 1762 ई॰ को अहमदशाह अब्दाली ने सिखों का नामोनिशान मिटाने के लिए छठा हमला किया। सिखों ने इसका डटकर मुकाबला करने की योजना बनाई और जगराओं के समीप इकट्ठे हुए। उन्होंने रणनीति अपनाई कि अब्दाली की फौज को खींचते हुए मालवा के मरूथलों में ले जाया जहाँ पानी की कमी के कारण उसे दु:खी किया जाये। इसी युद्ध में ही भाई ईशर सिंघ जी को काफी गहरे घाव लगे और कुछ दिनों के पश्चात् वे कालवास हो गये। इन दिनों में ही इन के दूसरे भाई संत सिंघ जी ने जन्म लिया। इनके पिता जी के कालवास होने से पूर्व इनका हाथ बाबा नारायण सिंघ, मिसल शहीदां को पकड़ा दिया।

बचपन

अकाली फूला सिंघ जी ने दस वर्षों की आयु में ही नितनेम, अकाल उस्तति, 33 सवैये तथा अन्य बहुत-सी बाणियाँ कंठ कर लीं। गुरबाणी का प्यार इतना था कि खेलने-कूदने की अलबेली अवस्था में भी हमेशा गुरबाणी ही पढ़ते रहते। धार्मिक विद्या में अच्छा निपुण होने के पश्चात् हर गुरसिख बच्चे के लिए शस्त्र विद्या बहुत ज़रूरी थी, इसलिए अकाली जी को शस्त्र विद्या का प्रशिक्षण आरम्भ करवाया गया। थोड़े समय में आप तलवारबाज़ी तथा धनुष बाण चढ़ाने में बहुत निपुण हो गये और घुड़सवारी तथा अन्य सामरिक गुणों के आप पूरी तरह माहिर हो गये। आप जी ने बाबा नारायण सिंघ जी के डेरे पर आकर अकाली शस्त्र वस्त्र पहन लिये और शहीदों की मिसल में शामिल हो गये। आप जी बाबा नारायण सिंघ जी के जत्थे के साथ ही श्री आनंदपुर साहिब आकर रहे। यहाँ सारा समय गुरुद्वारों की सेवा में व्यतीत हुआ। ज्यों-ज्यों आप जी का शुद्ध आचरण तथा धार्मिक जोश बढ़ता गया त्यों-त्यों आपका मान-सम्मान तथा रुतबा सारे जत्थे में माना जाने लगा। यहाँ तक कि बाबा नारायण सिंघ जी के जत्थे में बाबा जी के पश्चात् आप जी जत्थेदार नियुक्त किये गये।

सैनिक जीवन :

1800 ई॰ में आप जी, श्री अकाल तख्त साहिब में दूसरे गुरुद्वारों में गुंडागर्दी के कारण जो कुरीतियाँ प्रचलित हो गयी थीं, को सुधा के लिए श्री अमृतसर पहुँचे

और उनकी धुनाई करके प्रबंध को सही किया। आपने अमृतसर सरोवर की सेवा भी करवाई।

सन् 1802 की कड़कती सर्दी में महाराजा साहिब ने अमृतसर को खालसा राज्य के साथ मिलाने के लिए चढ़ाई कर दी। अमृतसर का प्रबंध इस समय भंगियों की मिसल के हाथों में था। गुलाब सिंघ भंगी की पत्नी सुखां अपने पति की मृत्यु के पश्चात् यहाँ का राज्य प्रबन्ध चला रही थी। जब उसको महाराजा रणजीत सिंघ के आने का पता चला तो अपनी सेनाओं को तैयार करके किले की बुर्जियों पर तोपें गाढ़कर और स्वयं मर्दाना वस्त्र पहन कर लड़ाई के लिए तैयार हो बैठीं। चार दिन तक दोनों ओर से अंधाधुध गोलाबारी होती रही। सुखां ने अपने में और मुकाबला करने की हिम्मत न देखी। सौभाग्यपूर्वक से एक दिन बहुत ज़ोर की वर्षा तथा अंधेरी आई जिस की आड़ में सुखां अपने पुत्र को बचाती हुए रात को किले में से निकल गयी और सरदार जोध सिंघ रामगढ़िया की हवेली में जा शरण ली।

अब किले पर महाराजा साहिब का अधिकार हो गया। इस किले में से जमजमा तोप महाराजा साहिब के हाथ लगी। इन दिनों में अकाली बाबा फूला सिंघ जी अमृतसर नें ही थे। उन्होंने महाराजा साहिब को शहर को लूटमार करने से मना किया और कहा कि यह गुरु की नगरी है। महाराजा साहिब ने सहर्ष इस बात को स्वीकार कर लिया और अपनी सेना को शहर की लूट मार करने से मनाह कर दिया। इस दिन से ही महाराजा साहिब का अकाली बाबा फूला सिंघ जी के साथ अगम्य प्यार हो गया। सरदार जोध सिंघ रामगढ़िया और अन्य मुख्य सरदारों के कहने पर माई सुखां तथा उसके पुत्र गुरदित्त सिंघ को गुज़ारे के लिए पाँच गांव महाराजा साहिब ने जागीर के तौर पर दे दिये।

1807 ई॰ के आरंभ में कुतुबुद्दीन ख़ान हाकिम कसूर द्वारा सिख राज्य के विरुद्ध फौजी तैयारी की रिपोर्ट महाराजा साहिब को मिली। महाराजा साहिब ने अकाली फूला सिंघ जी तथा अन्य सरदारों को ले कर काफी भारी फौज सहित 10 फरवरी 1807 को घेरा डाल लिया। शहर से बाहर दो भयानक लड़ाइयों में सिंघों की विजय हुई और कुतुबुद्दीन जान बचाने की खातिर फौज सहित किले में जा बैठा। सिख फौज़ों ने किले को घेरा डाल दिया। एक दिन रात को किले की दीवारों के नीचे सुरंग लगा कर क़िले की एक चौखटे की दीवार गिरा दी गयी और आमने-सामने लड़ाई हुई जिसमें महाराजा साहिब की फतेह हुई। इस युद्ध में अकाली जत्थे की बहादुरी तथा अकाली फूला सिंघ जी की शूरवीरता ने महाराजा को मोह ही लिया।

अगस्त, 1808 में अंग्रेज़ों ने अपनी कुटिल नीति के अनुसार मिस्टर मैटकॉफ को महाराजा साहिब के साथ मैत्री संबंध उत्पन्न करने के लिए भेजा। क्योंकि उस

समय तक सिखों के सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक निर्णय अमृतसर में हुआं करते थे, इसलिए महाराजा साहिब श्री अमृतसर आये। यह बात अमृतसर में हुई। मिस्टर मेटकॉफ के साथ एक पल्टन तथा कुछ सवारों का दस्ता था जो सारे शिया मुसलमान थे। मुहर्रम का दिन आ गया, उन्होंने अपने मतानुसार बहुत धूमधाम से ताजिया निकाला। "घोड़े' के आगे पीछे काफी शिया श्री अमृतसर, जी के बाज़ारों में बहुत ऊँची ऊँची आवाज़ से या अली ! या हुसैन !! के नारे लगाते हुए श्री दरबार साहिब जी के सामने पहुँचे। दोपहर का दीवान श्री अकाल तख्त साहिब में लग रहा था। भारी शोर शराबे के कारण कीर्तन में व्यवधान पड़ता देख कर अकाली जी ने दो तीन सिंघ उधर भेज दिये। मुसलमानों ने समझने की जगह पर उल्टे अपशब्द बोले, जिस के कारण हाथापाई हो गयी और एक सिंघ की दस्तार नीचे गिर गयी। अकाली जी को पता लगा तो वे तुरंत सिंघों को लेकर मौके पर पहुंचे। तलवारें चल गयीं और गोली भी चली। इस भयानक ख़बर का पता लगते ही महाराजा रणजीत सिंघ आ कर बीच में खड़े हो गयें और इस प्रकार झगड़ा समाप्त करवाया।

1809 की सर्दियों के आरंभ में अकाली फूला सिंघ जी श्री दमदमा साहिब के प्रबंध के लिए गये। दो मास के पश्चात् यह अफवाह फैल गयी कि फिरंगी पंजाब के नक्शे तैयार कर रहे हैं और थोड़े दिनों में ही सारे पंजाब देश पर अपना अधिकार जमा लेंगे। अकाली जी इस अफवाह की वास्तविकता का पता करने के लिए गांव चाउके अपने सिघों सहित पहुँचे तो दूर से ही पता चल गया कि वहाँ जो सामने टैंट हैं। उसमें कप्तान वाइट नक्शे आदि तैयार करवा रहा है। उस समय कैप्टन वाइट के साथ 100 पैदल सिपाही थे। सिंघों से डर कर कैप्टन वाइट तथा उसके दस्ते ने साथ वाले गांव फतेह के में जा पनाह ली। महाराजा जसवंत सिंघ वालिया नाभा को भी यह समाचार पहुँचा था कि अकाली फूला सिंघ जी आक्रमण करने के लिए चाऊके जा रहे हैं। उन्होंने शीघ्र अपने भतीजे रण सिंघ को अकाली जी को समझाने के लिए भेजा। अकाली साहिब फतेह के हमला करने ही लगे थे कि ऊपर से रण सिंघ जी पहुंच गये और कप्तान वाइट के आने का सारा हाल सुनाया तब मुश्किल से कहीं ये पीछे हटे। अंग्रेज़ सरकार को जब इस घटना का पता लगा तो उन्होंने महाराजा से अकाली जी को मांगा, पर महाराजा ने अकाली जी का पंथ में अच्छा प्रभाव देख कर टालमटोल करके समय निकाल दिया।

पहले पंथ, पीछे कुछ और

कुछ समय के पश्चात् अकाली जी श्री अमृतसर आ गये। अमृतसर आ कर अकाली साहिब का महाराजा साहिब के साथ नीचे लिखे कारणों से मतभेद हो गया :

(1) महाराजा द्वारा डोगरों को ज़िम्मेवारी के पद प्रदान करना।

(2) मिश्र गंगाराम की दिलचस्प कारवाइयों तथा अपने रिश्तेदारों को दरबार में भर्ती करते रहना।

(3) शहज़ादा खड़क सिंघ तथा महाराजा के बीच फूट डालना।

(4) कौर शेर सिंघ के बारे में महाराजा को बदज़न करना।

इन उपरोक्त कारणों को दृष्टि में रखते हुए आप सिख राज्य की वृद्धि के लिए अमृतसर से लाहौर पहुँचे। इधर जब डोगरे भाइयों को अकाली जी के महाराजा को मिलने आने की ख़बर मिली तो ऐसी चालें गयीं कि कई दिन तक अकाली जी को महाराजा से मिलने नहीं दिया गया। अंत में एक दिन ज़बरदस्ती अकाली जी किले में जा घुसे। महाराजा साहिब आगे से बहुत प्यार तथा सम्मान सहित मिले और उनके लिए लंगर मंगवा कर आगे रखा जिसको अकाली जी ने अस्वीकार कर दिया और कहा, **"आप खालसा राज्य में गैर-सिखों को पद प्रदान करने की नीति के विरूद्ध काम कर रहे हो। अत: यह तरीका राज्य के लिए हानिकारक है, कलगीधर पिता ने आपको अपने प्यारे पंथ की बागडोर पकड़वाई है। यदि आप अपनी इस नीति को नहीं बदलोगे तो हमारी यह अंतिम फतेह है, आप जानें तथा आपका काम जाने।"** महाराजा साहिब ने अकाली जी को अपनी सफ़ाई देने का यत्न किया पर अकाली जी यह कहते हुए कि पंथ पहले है, बाकी सारे बाद में, वहाँ से चले आये।

सेनाओं ने सम्मान में हथियार डाल दिए

अकाली जी उसी समय वापिस अमृतसर आ गये और यहाँ उसी दिन अपने जत्थे सहित भाद्रो, 1871 विक्रमी को श्री आनंदपुर साहिब के लिए रवाना हो गये। 16 श्रवण अश्विन 1871 विक्रमी को शाहज़ादा प्रताप सिंघ जींद ने रियासती कामों में मतभेद के कारण तथा सरकार के साथ खटपट होने के कारण श्री आनंदपुर साहिब में आकर अकाली फूला सिंघ जी के पास पनाह ली।

अंग्रेज़ी ऐजंट ने शाहज़ादे की मांग की, जिसे अकाली जी ने ठुकरा दिया। इस पर अंग्रेज़ सरकार ने सितम्बर 1814 में महाराजा साहिब को लिखा कि अकाली फूला सिंघ जी को अपने इलाके में मंगवा लो।

लाहौर दरबार में लिखाई-पढ़ाई का अधिकतर काम गैर सिखों के हाथों में था। अकाली जी की निर्भयता, जिनके सीने में सदा काँटे की तरह चुभती रहती थी उन्होंने एक गहरा षडयंत्र रच कर अकाली जी को अंग्रेज़ों तथा महाराजा के बीच फूट डालने वाला बताया और महाराजा से स्वीकृति ले कर फिल्लौर के किलेदार दीवान मोतीराम

को आदेश भेजा कि अकाली जी को ज़बरदस्ती वापिस लाया जाये। अत: अक्तूबर 1814 में दीवान मोती राम सेना ले कर आनंदपुर साहिब की ओर चल।

वहाँ पहुँच कर अकाली जी को पकड़ने का आदेश किया गया तो सारी फौज ने हथियार ज़मीन पर रख दिये और आगे बढ़ने में साफ इन्कार कर दिया। सभी फौजियों ने कहा कि अकाली जी जैसे बलि योद्धा तथा धर्मात्मा महापुरुष को हम कभी भी अपमानित नहीं करेंगे। चाहें सिर भी क्यों न देना पड़ जाये। इधर अंग्रेजी ऐजन्ट ने राजा जसवंत सिंघ नाभा तथा नवाब मालेरकोटला को भी अपनी सेनाए ले कर अकाली जी पर आक्रमण करने के लिए लिखा पर परिणाम वही कुछ था जो मोती राम को पेश आया था। महाराजा साहिब को जब सारे हालात का पता लगा तो उन्होंने उसी समय फौज वापिस बुला ली। शेरे पंजाब ने फिर बाबा साहिब सिंघ जी बेदी, जो अकाली जी के बहुत स्नेही थे, को समझा कर आनंदपुर साहिब भेजा। बाबा साहिब सिंघ जी ने अकाली जी को मिल कर सारी पोज़ीशन समझाई तब वे बाबा साहिब के साथ वापिस श्री अमृतसर आ गये। महाराजा साहिब और अन्य सिख सरदार आगे से स्वागत के लिए आये।

अड़े–सो–झड़े

महाराजा रणजीत सिंघ चैत्र संवत 1873 विक्रमी (मार्च 1816) को पहाड़ी दौरे से निवृत्त हो कर तरनतारन साहिब दर्शनार्थ आये तो यहाँ पर रिपोर्ट मिली कि सखर तथा लीहे के नवाब मुहम्मद ख़ान को पीर हाफिज अहमद ख़ान ने निकाल कर कब्ज़ा कर लिया है। उसी समय एक सजावारी मुहिम अकाली जी तथा सरदार फतेह सिंघ जी आहलूवालिया की सरदारी में तैयार करके दरिया सिंघ के रास्ते भेज दी गयी और आप स्वयं खुश्क इलाकों से होते हुए ख़ानगढ़ आ मिलने का फैसला किया। ख़ानगढ़ पहुच कर मीर हाफिज अहमद के किले ख़ानगढ़ पर धावा बोल दिया गया। थोड़े से टकराव के पश्चात् मीर के भतीजे जहानदाद खान ने हथियार फैंक दिये। इस किले की फतेह होने के पश्चात् अकाली जी ने तुरंत अहमद कोट पर जा आक्रमण किया। यह किला ख़ानगढ़ के किले से काफी मज़बूत था। तीन दिन खूब डट कर रणभूमि गर्म रही। 12 अप्रैल, 1816 को चौथे दिन सुरंग खोदे कर बारूद से किले की एक कोने वाली दीवार गिरा दी गयी जिससे अकाली की फौज अंदर जा घुसी और किला सर कर लिया गया तथा मीर काबू आ गया। अकाली जी ने यहाँ से निपट कर झंग की ओर चढ़ाई कर दी। यहाँ के हाकिम अहमद ख़ान के हाथों इस की रैयत बहुत तंग थी और जाते ही झंग का किला घेर लिया और छोटी-सी लड़ाई के पश्चात् एक हल्ले में ही अहमद ख़ान को कैद कर लिया और 7 ज्येष्ठ 1873 संवत विक्रमी को वापिस लाहौर आ पहुंचे।

कश्मीर की पहली लड़ाई में राजौरी वाले अंगर ख़ान ने महाराजा साहिब के साथ विश्वासघात किया था। अक्तूबर सन् 1815 ई॰ को महाराजा साहिब ने दीवान राय दयाल, सरदार दल सिंघ, अकाली फूला सिंघ, सरदार हरि सिंघ नलुवा को हुक्म दे कर भेजा कि राजौरी आदि सब पहाड़ी इलाके, जो कि पीर पंजाल के अंदर है, ज़ब्त कर लिये जाये। महाराजा साहिब स्वयं भी वज़ीराबाद के रास्ते पीछे ही गये और भिंबर जा बैठे। खालसा फ़ौजों के आगे बढ़ने पर अगर ख़ान किले को खाली करके कोटली के किले में जा छिपा। खालसा फ़ौज ने किले पर कब्ज़ा कर लिया। इसके पश्चात् खालसा फौजों ने कोटली पर भी कब्ज़ा कर लिया। भिंबर और राजौरी के हाकिम पकड़ कर लाहौर पेश किये गये और पीर पंजाल के अंदर का सारा इलाका कब्ज़े में कर लिया गया। अकाली फूला सिंघ ने इस मुहिम में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

1816 ई॰ में हो महाराजा साहिब पाकपटन तथा मुल्तान की ओर दौरा शुरू कर दिया। रास्ते में से पाकपटन तथा बिलावलपुर आदि से नज़ारे लेते हुए महाराजा साहिब हड़प्पा के रास्ते तुलंभे आ बैठे। इस समय अकाली बाबा फूला सिंघ जी भी आप के साथ ही थे।

तुलंभे में ही महाराजा साहिब को, मुल्तान का वकील तोहफे लेकर आ मिला। महाराजा साहिब ने पिछला बकाया एक लाख बीस हज़ार रुपया मांगा। बाद में पता चला कि मुज़फ्फर ख़ान केवल चालीस हज़ार रुपये देने को तैयार है, जोकि महाराजा साहिब ने स्वीकार न किया और मिश्र दीवान चंद तथा अकाली बाबा फूला सिंघ को चढ़ाई करने का हुक्म दिया। इन्होंने अहमदाबाद पर कब्ज़ा करने के पश्चात् मुल्तान शहर को घेरा डाल लिया। शेरे पंजाब भी चनाब (झनां) पार कर के सलारवान जा बैठा। परन्तु अकाली बाबा फूला सिंघ ने मामूली लड़ाई के पश्चात् ही शहर पर कब्जा कर लिया। मुज़फरख़ान ने 80,000 रुपये दे कर सुलह कर ली और बाकी का बकाया रकम दो मास में अदा करने का वायदा किया।

हज़ारे का हाकिम अहमद ख़ान लगान देने से अकड़ बैठा। सन 1817 ई॰ के अंत में महाराजा साहिब के शाहज़ादा शेर सिंघ तथा अकाली जी को अहमद ख़ान की धुनाई के लिए फ़ौज देकर भेजा। यहाँ पर बहुत घमासान का युद्ध हुआ। अहमद ख़ान मारा गया। उसके पुत्र ने 50,000 की जगह पर 75,000 रुपये देना स्वीकार कर लिया। इसलिए उसको ही हज़ारे का हाकिम बना दिया गया।

संवत 1874 के आरंभ में नवाब मुजफर ख़ान मुल्तान ने सारा लगान देने से इन्कार कर दिया। महाराजा साहिब ने एक भारी सेना, दीवान मोतीराम, भिवानी दास तथा मिश्र दीवान चंद को दे कर भेजी। फौज ने पहुंचते ही मुल्तान को घेर लिया

पर इन मुखियों की सुस्ती तथा बेपरवाही के कारण घेरा काफी देर तक पड़ा रहा और इन मुखियों को नाकामयाब हो कर वापिस लाहौर आना पड़ा। जांच होने पर इन मुखियों का दोष सिद्ध हुआ और इन्हें यथोचित सज़ाएं दी गयीं।

इस उपरोक्त अपमान के कारण महाराजा ने दूसरी बार 30 जनवरी, 1818 को 25,000 सेना शाहज़ादा खड़क सिंघ की सरदारी में भेजी। आगे से मुज़फर ख़ान भी पूरी तरह तैयार था और उसने इस्लाम का झंडा जेहादी लड़ाई के लिए खड़ा कर दिया जिसके कारण हज़ारों गाज़ी, नवाब के जेहादी झंडे के नीचे आकर एकत्र हुए। मुल्तान में नवाब अपने पुत्रों, बीस हज़ार सेना तथा असंख्य गाज़ियों के साथ शहर के किले को बचाने के लिए पूरी तरह तैयार बैठे थे।

खालसा राज्य का रक्षक

5 फरवरी, 1819 को खालसा की फौज को मुल्तान के समीप पहुँचते ही नवाब की फौज ने एक खुले मैदान में, जहाँ उन्होंने मोर्चे जमा रखे थे, आगे बढ़ने से रोकने के लिए धुआंधार गोली व गोले चलाये पर खालसा फौज बराबर आगे बढ़त ही गयी और नवाब को फौज सहित मुल्तान शहर के अंदर धकेल दिया गया। नवाब ने शहर में घुस कर दरवाज़े बंद कर लिये। खालसा फौज ने शहर को घेरा डाल कर चारों ओर से भारी तोपें तान कर गोले बरसानें शुरू कर दिये। छः दिन बराबर अग्नि वर्षा होती रही पर कुछ न बना। अंत में दीवारों के नीचे सुरंगे लगा कर उड़ाने का कार्यक्रम बनाया गया। सुरंग अभी बनायी ही गयी थी कि बरसात आ गयी और उनमें पानी भर गया। बरसात के पश्चात् दुबारा सुरंगें बनाकर किले की एक दीवार हिला दी गयी और साथ हीं ऊपर नीचे कई सौ गोले चलाये गये जिससे दीवार फट गई और तुरन्त ही घुड़सवारों के दल द्वारा आक्रमण करवा दिया गया। बहुत खूनी युद्ध हुआ। उपरांत 12 फाल्गुन को शहर पर खालसा फ़ौज का कब्ज़ा हो गया। इसके पश्चात् किले की बारी आई जो कि बहुत मज़बूत था। उस का घेरा डाला गया। भारी तोपखाने कई दिन किले पर गोली चलाते रहे पर कुछ न बना। इस प्रकार यह घेरा 3 मास तक डाला रहा। ऊपर से कहर की गर्मी, मुर्दा जानवरों की बदबू से फ़ौज में हैज़ा फैल गया और कई जवान मरने लगे।

महाराजा रणजीत सिंघ जी ने जब यह हालात सुने तो बहुत चिंतातुर हुए और श्री अमृतसर साहिब में अकाली जी को मिलने के लिए गये और सारी कठिनाइयों से उन्हें अवगत करवाया। आगे से अकाली जी ने कहा कि डोगरों के पालनकर्त्ता पहले क्यों नहीं बताया ? किस लिए तूने खालसा दल को इतनी कठिनाइयों में फंसा कर रखा है ? फिर भी सेनाएं रणभूमि की ओर जाने को तैयार थीं, यदि गुरू को भाया तो अकाली झंडा मुल्तान के किले पर गाड़ कर वापिस आय़ेंगे। निहंगों

की छावनी में तैयारी के नगारे को चोट लगायी गयी और कूच का अरदासा सोध कर बाबा जी ने पाँच सौ चुने गए अकालियों सहित, मशहूर भंगियों की तोप को साथ ले कर, 11 ज्येष्ठ संवत 1875 को मुल्तान की ओर चढ़ाई कर दी। 18 ज्येष्ठ को मुल्तान पहुंच गये। शाहज़ादा खड़क सिंघ से सारे हालात पूछ कर सीधे मैदानी जंग की ओर बढ़े और भंगियों की तोप, जमजमा खिजरी दरवाज़े के सामने दाग़ कर गोले चलाने से दीवार दो फाड़ हो गयी। अकाली सिंघ, जयकारों की गूंज में अंदर जा घुसे और इतना कहर का हल्ला किया और हाथों-हाथ तलवार चलाई कि आगे से गाज़ी भी इन पर उल्टे टूट पड़े। सौभाग्यवंश से मुड़फ्फर खान अकाली जी के सामने आ गया और डट कर लड़ाई करने के पश्चात् ज़मीन पर ढेर हो गया। इतने में नवाब के बड़े पुत्र शाहनिवाज ख़ान ने बाबा जी पर आक्रमण किया व अकाली जी को एक गहरा घाव हो गया। फिर बाद में सरदार धन्ना सिंघ मलवई तथा शाम सिंघ अटारी आ पहुंचे और शाहनिवाज़ को वहीं बुला दिया।

इससे गाज़ियों के पाँव उखड़ गये। सिंघों ने ऊपर से और ज़ोर लगाया तो उनमें पूरी भगदड़ मच गयी। इस युद्ध में 12 हज़ार से अधिक मुसलमान नवाब मुजफ्फर ख़ान तथा उसके पांच पुत्रों सहित मारे गये।

शहज़ादा खड़ग सिंघ सहित अकाली फूला सिंघ तथा अन्य सरदारों के अमृतसर पहुंचने पर महाराजा साहिब सब से पहले अकाली फूला सिंघ जी को मिले और आप जी को **'खालसा राज्य का रक्षक"** कह कर सम्मानित किया गया।

मुल्तान की विजय का श्रेय अकाली फूला सिंघ को था। इसके कुछ प्रमाण इस प्रकार मिलते हैं :

(1) कलकत्ता रिव्यू जिल्द 6, पृ॰ 279, दिसम्बर 1846 के अभिलेख"में दर्ज है :

"Ranjit Singh's whole army would have been repuled from Multan, had not Phoola Singh, a mad Akali, borrowed from Baeuline the courage to lead a storming party against the Breach."

इसी प्रकार पेशावर गज़टीयर के पृष्ठ 65 पर, सन् 1823 की लड़ाई का हाल इसी प्रकार लिखा है जिसमें मुल्तान की लड़ाई का भी वर्णन है :

In this action 10,000 Pathans are said to have been slained. And with them fell that gallant old sikh soldier Phoola Singh, the interpid leader of the Akal or immortal who five years before had led the way into the breach at Multan, and was on this occasion no less conspicious for this gallantry.

फिर कार्तिक संवत 1875 (सन् 1818) में महाराजा साहिब, खालसे का दल तथा नामक सरदार साथ ले कर इलाका पेशावर पर चढ़ाई कर के आ गये। दरिया अटक पर पहुंचते ही एक बेड़ियों का पुल तैयार करवाया गया और बाकी रसद आदि का पक्का प्रबन्ध करते हुए यहाँ से आगे बढ़ें।

दरिया पार के इलाके के खटकों तथा अन्य पठानों को जब महाराजा रणजीत सिंघ की चढ़ाई की खब8र पहुंची तो उन्होंने तुरंत ही इलाके के लश्कर को एकत्र करके खैराबाद की पहाड़ियों में मोर्चे लगा कर पूरी तरह रहा बंद कर दी। पुल के तैयार होने पर खालसे का एक छोटा-सा दस्ता इलाके की जानकारी के लिए पार भेजा गया और अभी ये पार हो कर थोड़ा-सा ही आगे बढ़े थे कि पहाड़ी मोर्चों से खटकों ने धूआंधार गोली चलाई और पिछली ओर से आक्रमण करके इस छोटे से जत्थे को घेर लिया और इस जत्थे के सिंघ अपनी वीरता का प्रमाण देते हुए शहीदी प्राप्त कर गये।

यह दु:खदायी समाचार सुनकर महाराजा साहिब ने एक जबरदस्त जत्था अकाली फूला सिंघ जी तथा सरदार महताब सिंघ जी नाखेरिया और सरदार हरि सिंघ नलुवा की सरदारी में भेज दिया ताकि पठानों को अपने किये का फल दिया जाये। अकाली जी के पार पहुँचते ही फिरोज़ ख़ान तथा नजीब उल्ला ख़ान खटकों ने एक भारी लश्कार के साथ पहले की तरह इन पर आक्रमण बोल दिया। अकाली जी एक सुयोग्य युद्ध नीतिवान थे इसलिए वैरी को मोर्चों के बाहर निकालने के लिए दस्ते को थोड़ा समय के लिए पीछे हटने का आदेश दिया, इनके हटते ही पठान यह समझ कर कि सिख भागने लगे हैं, जल्दी ही पहाड़ियों से इनका पीछा करने के लिए नीचे उतर आये। अकाली फूला सिंघ जी ने, जो इस समय की ताक में थे, झपट कर अपने दस्ते को हुक्म दिया कि एकदम मुड़ कर वैरी को चारों ओर से घेर लिया जाये। जब लड़ाई में फिरोज ख़ान को चारों ओर से अपने सिर आफत टूटती नज़र आयी तो उसने तुरंत सफेद झंडा उठाकर युद्धबंदी के लिए विनय की।

अगले दिन बाकी की सेना तथा महाराज साहिब ने भी दरिया से पार डेरे लगाये। फिर खैराबाद तथा जहांगीर के किले में अपनी सेनाओं को तैनात करके बाकी की सेना को पेशावर की ओर भेज दिया। यह सेना अभी नौशहरे से थोड़ी ही आगे बढ़ी थी कि अकाली जी को जासूस ने समाचार दिया कि शेख उम्र की चमकनियाँ में गाजियों की भारी सेना एकत्र हो रही है और वह रास्ता रोकने की तैयारियाँ कर रहे हैं। अकाली जी ने सवारों का एक दस्ता लेकर रातों रात चमकनियाँ पर जा धावा बोला। गाजी अभी बेचारे सोये हुए थे कि सिंघों ने शहर को घेर लिया। जब घोड़ों की टापों की आवाज़ से उनकी आँखें खुलीं तो सभी अपने आपको सिंघों को तलवार के नीचे घिरा हुआ पाया। वे सिंघों की प्रलय से बहुत घबराये और जिधर किसी को रास्ता मिला, वे उसी ओर भाग उठा। चमकनियाँ की विजय के पश्चात् खालसे का पेशावर में ऐसा दबदबा छाया कि अगले दिम 4 माघ, 1975 तदनुसार 20 नवम्बर 1818 को बिना किसी युद्ध के अकाली फूला सिंघ ने पेशावर पर अधिकार कर लिया।

यार मुहम्मद ख़ान, पेशावर का हाकिम, पहले ही शहर खाली करके इश्त नगर की ओर भाग गया था। अकाली फूला सिंघ ने पेशावर पर अधिकार करने की ख़बर महाराजा साहिब को पवी के मैदान में भिजवाई। दूसरे दिन शेरे पंजाब जब पेशावर में पहुँचे तो आगे से वहाँ हिसार किले पर खालसे का झंडा झूल रहा था। महाराजा साहिब ने अपनी ओर से पेशावर की गवर्नरशिप जहांदाद ख़ान को दे दी और स्वयं वापिस लाहौर को चल दिए। महाराजा साहिब अभी अटक ही पहुँचे थे कि यार मुहम्मद ख़ान ने बार्कज़ईयों की सहायता से पेशावर पर अधिकार कर लिया। यार मुहम्मद ख़ान को यह पता था कि मैं महाराजा साहिब का मुकाबला नहीं कर सकता। इसलिए उसने दीवान दमोदर मल तथा हाफिज रूहला द्वारा महाराजा साहिब के पास नज़राना भेजा और विनती की कि पेशावर की हकूमत आप की ओर से उसे प्रदान की जाये। महाराजा साहिब ने अकाली जी के साथ विचार करके यार मुहम्मद ख़ान की बात मान ली। इसलिए महाराजा साहिब के दिल में अकाली फूला सिंघ के अद्वितीय योद्धा होने के साथ-साथ समझदार प्रबंधक होने का भी सिक्का बैठ गया जिसकी प्रशंसा लाहौर पहुंच कर महाराजा साहिब ने एक बहुत बड़े दरबार में की।

सन् 1819 के आरम्भ में पंडित बीरबल ने जब लाहौर पहुँच कर कश्मीर की प्रजा पर हो रहे अत्याचारों का दर्द भरा हाल सुनाया, तो वहाँ के लोगों की रक्षा के लिए 8 वैसाख संवत 1876 को 30,000 खालसा फ़ौज महाराजा साहिब ने अपनी कमान में लेकर कश्मीर की ओर कूच कर दिया और वज़ीराबाद पहुँच कर यह प्रस्ताव पास किया गया कि सिख फ़ौजों को तीन भागों में इस प्रकार बांट दिया जाये कि एक दस्ता दीवान चंद तथा सरदार शाम सिंघ जी अटारी वाले की सरदारी में, दूसरा जत्था शाहज़ादा खड़ग सिंघ तथा बाबा फूला सिंघ अकाली की कमांड में आगे भेजा जाये और तीसरा भाग महाराजा साहिब के पास इसलिए रहे कि जहाँ भी कहीं सहायता की आवश्यकता हो वहीं पर तुरंत सहायता पहुँच जाये।

1 मई, 1819 को ये दोनों दल भिवर के इलाके में से निकल कर राजौरी जा पहुँचे। यहाँ का हाकिम अगरख़ान कुछ समय से अपना पहला अहदनामा तोड़ कर बागी हो गया था। इसलिए खालसा फ़ौज ने आते ही इसका इलाका घर लिया। अगरख़ान तो लड़ाई में असमर्थता के कारण रातों रात दौड़ गया। भाई रहीमउल्ला ख़ान अपने आप ही खालसा फ़ौज में आ मिला और इसने पहाड़ी इलाके में रास्ता आदि बताने में काफी सहायता की। यहाँ से दोनों जत्थे आगे बढ़े पर पहाड़ी रास्तों के खराब होने के कारण अकाली जी, अपने जत्थे के घुड़सवार व कुछ जवान उनकी देख भाल के लिए रहीमउल्ला ख़ान के पास छोड़ गये। इस प्रकार यह पैदल उल्टे

सीधे पहाड़ी रास्तों को छोड़कर, सीधी पगडंडियों की राह पर, दूसरे दस्ते से बहुत आगे 21 ज्येष्ठ को बहराम गला पहुँच गये। यहाँ पर मीर मुहम्मद ख़ान और मुहम्मद अली ख़ान हाकिम सुपन ने खालसा की अधीनता को स्वीकार कर लिया पर ज़बरदस्त ख़ान हाकिम पुणछ सेना एकत्र करके लड़ाई के लिए तैयार हो गया। अकाली जी के जत्थे ने आक्रमण किया और छोटी सी लड़ाई के पश्चात् ही सारे नाके वैरी से छुड़वाकर अपने नियंत्रण में कर लिए। अगले दिन तराई किले को जा घेरा डाला और बाहर से ज़बरदस्त गोलाबारी की गयी। सुरंग लगा कर किले की एक दीवार भी उड़ा दी गयी और ज़बरदस्त ख़ान को पूरी तरह घेर लिया। वह हुल्लड़ मचा कि अंत में ख़ान तथा उसके बहुत से साथियों को कैद कर लिया गया। किले पर अपना कब्ज़ा जमा कर कुछ सेना को यहां रखा गया। यहां से फिर दोनों दस्ते पीर पंज़ाल के नाकों को अपने अधिकार में रखने के लिए अलग-अलग रास्तों से आगे बढ़े। जब पठानों को ख़बर मिली तो वे ऊपर पहाड़ों के दोनों ओर अपने मोर्चे जमा कर, रास्ते बंद कर बैठे। जब खालसा की फ़ौज ने रास्ता बंद देखा तो पहाड़ के ऊपर से गोलियां भी बरसाई गयीं तो खालसा ने उसी तरह उत्तर दिया। पर पठानों के पहाड़ों के ऊपर होने के कारण खालसा की गोलियां उन तक नहीं पहुंच सकती थीं। अंत में अकाली जी ने पहाड़ की चोटियों पर पहुंच कर अपने अकाली जत्थे को मोर्चे छुड़वाने का हुक्म दिया। ये वीर बहादुर हाथ पैर चलाते हुए तीसरे पहर ऊपर जा पहुँचे और जाते ही तलवार तथा संगीनों द्वारा युद्ध किया। सूर्य डूबते ही गाज़ियों ने हार मान ली और जिधर राह मिली उधर भाग गये।

यहां से ये 26 जून को सराय इलाही के मुकाम पर पहुँचे। जासूस ने ख़बर दी कि जबार ख़ान 5,000 अफ़गानी सेना के साथ सुपइयां (सुपन) का रास्ता रोके युद्ध के लिए तैयार बैठा है। 3 जुलाई, 1819 को अभी अंधकार ही था कि सिख सेनाओं ने अफ़गानी सेनाओं को तोपों की मार में लेकर हमला बोल दिया। दोनों ओर से कहर की आग बरसाई गयी। जबारख़ान भी कोई अनजान नहीं था जो आसानी से काबू आ जाता। उसने पक्के पत्थरों के ऐसे मोर्चे बनवाये हुए थे कि सारा दिन लगातार तोपों के चलने पर भी अफ़गानी फ़ौज ज़रा भी अपनी जगह से पीछे न हटी। दोपहर के पश्चात् दीवान चंद ने तोपख़ाना हटा कर कुछ और आगे बढ़ना चाहा। अभी ये इन तैयारियों में ही लगे थे कि शत्रु ने यह समय अमूल्य जान कर तुरंत ही एक अफ़गानी दस्ते के साथ तोपख़ाने पर एक जबरदस्त आक्रमण कर दिया। परिणामस्वरूप दीवान चंद के तोपख़ाने की दो तोपें उस के कब्जे में आ गयीं। अकाली फूला सिंघ ने जब अफ़गानी फ़ौज को आगे बढ़ते हुए देखा तो उसी समय अपने जत्थे सहित दायीं ओर से शत्रु पर टूट पड़ा और अफगानों के साथ

गुन्थम गुथा हो कर वह तलवार चलाई कि लहू के साथ धरती रंगी गये। अकालियों के अगम्य साहस के सम्मुख अफ़गानों को कोई पेश न गयी और वे घबरा कर भाग लिये। सरदार जबार ख़ान सख्त घायल हुआ और जान बचा कर भाग गया। खालसा फ़ौज ने किला शेर गढ़ी तथा अन्य चौकियां भी विजयी कर लीं और इस प्रकार सारे कश्मीर पर खालसा का पूरा राज्य स्थापित हो गया।

4 जुलाई सन् 1819 को खालसा दल भारी धूमधाम से बिना किसी लूटमार के श्री नगर शहर में दाख़िल हुआ। शाहज़ादा खड़ग सिंघ, अकाली फूला सिंघ, सरदार हरी सिंघ नलुवा आदि जरनैल जब लाहौर पहुँचे तो सारे शहर में बहुत लम्बा हाथियों का जलूस निकाला गया। महाराजा रणजीत सिंघ बार-बार अकाली जी से कश्मीर के लोगों पर ही रहे अत्याचार का समाचार तथा युद्ध संबंधी समाचार पूछते रहते।

जनवरी सन् 1823 में मुहम्मद अजीम ख़ान बार्कज़ई, जो उन दिनों में काबुल का हाकिम था, बहुत बड़ी तैयारियाँ कर के पेशावर पर फिर अधिकार करने के लिए जलालाबाद की ओर बढ़ा। यार मुहम्मद ख़ान, जो मुहम्मद अज़ीम ख़ान का भाई था और महाराजा साहिब की ओर से पेशावर का गवर्नर था, अंदर ही अंदर अपने भाई की इच्छानुसार, पर बाहर से यह बता कर कि वह मुहम्मद अजीम ख़ान के मुकाबले की शक्ति नहीं रखता, पेशावर खाली कर के यूसफजई के पहाड़ों में जा छिपा। मुहम्मद अजीम ख़ान पेशावर को खाली देख कर 12 फरवरी, 1823 को बिना किसी रोक टोक के शहर पर कब्ज़ा कर लिया।

जिस समय यह समाचार लाहौर पहुँच तो सरदार हरी सिंघ जी नलुवा की सलाह पर सामना करने के लिए योजना बनायी गयी। सरदार हरी सिंघ जी ने यह सलाह दी कि इस युद्ध में अकालियों का शामिल होना बहुत आवश्यक है। इसलिए महाराजा साहिब ने अकाली फूला सिंघ जी को भी इस युद्ध में लड़ने के लिए विनय कर भेजी। दूसरी ओर मुहम्मद अज़ीम ख़ान के अपने भतीजे मुहम्मद जमान ख़ान तथा समद ख़ान को तथा फिरोज ख़ान खटक के पुत्र खवास ख़ान के साथ भारी सेना खटकों तथा अफरीकियों को भिजवाकर जहांगीरे पहुँचते ही एक हिस्से तो किले का घेरा डाल लिया और बाकी के लोगों ने समीप की पहाड़ियों पर पक्के मोर्चे तथा बड़े-बड़े संघर बांध कर अटक से इस पार आने वालों के सारे रास्ते बंद करके अपने कब्ज़े में कर लिये। इन जगहों पर ये मोर्चे इन्होंने यह सोचकर लगाये थे कि पहले तो सिखों की फ़ौज को दरिया अटक से पार की रोका जाये गर यदि यह पार पहुँच ही जाये तो उन पर बेख़बरी में ऐसा हल्ला किया जाये कि एक सिख भी जिंदा वापिस न जा सके। मुहम्मद अज़ीम ख़ान ने नौशहरे तथा हिष्त नगर के

गाज़ियों में गोली बारूद, हथियार तथा अन्य जंगी सामान खुले दिल से बांट दिया। गाज़ियों की रोकथाम के लिए सरदार हरी सिंघ जी को जा मिले। 23 फाल्गुन को आप स्वयं अकाली फूला सिंघ सहित सरदार देसा सिंघ मजीठिया, सरदार अजीम सिंघ सूरिया वाला, सरदार रतन सिंघ घरजाखिया आदि चुने हुए सरदार तथा 25,000 का दल साथ ले कर बहुत तेज़ी से पांचवें दिन अपनी मंज़िल पर जा पहुँचे। इसी दिन प्रातः महाराजा साहिब के पहुंचने से पूर्व ही शाहज़ादा शेर सिंघ तथा हरि सिंघ नलुवा ने दरिया अटक से किश्तियों के पुल से पार हो कर अपने दस्ते को दो हिस्सों में बांट दिया। बहुत घमासान का युद्ध हुआ। मुहम्मद ज़मान ख़ान ने दरिया अटक का पुल उड़वा दिया ताकि पार की फ़ौज इनकी सहायता के लिए न पहुँच सके। जल्दी ही पुल बनाना कठिन काम था जिससे खालसा के दिल उछाले खा रहा था। इतने में एक जासूस मैदाने जंग से शनाई पर तैर कर ख़बर लाया कि खालसा के दस्ते को दुश्मन ने बुरी तरह घेर लिया है। यदि समय पर ही सहायता न पहुंची तो भय है कि सारा दस्ता सख्त नुक्सान उठायेगा। जब उन्होंने अपने सिख भाइयों को शत्रु के हाथों घिरा हुआ सुना तो किसी से न रहा गया और कोई इस बात को सहन न सका। अकाली फूला सिंघ जी की धमनियों में अपने भाइयों के प्रति प्यार ने इतना उछाल खाया कि वे एक पल भी ठहर न सके और अपने जत्थे सहित दगड़-दगड़ करते दरिया में घोड़े मोड़ दिये। साथ ही महाराजा साहिब सभी सरदारों तथा सेना के अकाली सिंघ पीछे-पीछे दरिया अटक में घुस गये। महाराजा रणजीत सिंघ तथा अकाली फ़ौजों के दरिया पार कर लेने की सूचना पाते ही खटकों के पैर मैदान में से उखड़ गये और अकाली के नगारे की चोट ने गाज़ियों की बाकी बची खुची हिम्मत को भी तोड़ दिया। सरदार हरि सिंघ ने किले पर कब्ज़ा कर लिया। यहाँ से अफ़गानी फ़ौज हार कर नौशहरे के लश्कर में जा मिली और वहां अगली युद्ध की तैयारियां आरम्भ करने लगे। महाराजा रणजीत सिंघ ने खैराबाद तथा जहांगीरे के किलों को पक्का करके अकौड़े के मैदान में जा डेरे लगाये और यहां सारी फ़ौज को एकत्र कर के रसद आदि का पक्का प्रबंध होने लगा। यहां से कई भेदिये गाज़ियों के समाचार लाने के लिए नौशहरे की ओर भेज दिये गये।

अकाली फूला सिंघ जी का प्रण पालन

14 मार्च, 1823 को प्रभात समय का दीवान सजा। समूह खालसई सेना ने अपने जत्थेदारों सहित दीवान में हाज़री भरी। आने वाली लड़ाई के बारे में सिख जरनैल तथा महाराजा रणजीत सिंघ अलग तौर पर विचार कर चुके थे। जत्थेदारों ने शंका व्यक्त की कि यदि हमेले के लिए थोड़ा-सा भी विलम्ब किया गया तो शत्रुओं की

सेना के भारी संख्या में जमा हो जाने की गुंजाइश हो जायेगी। विचार करने के पश्चात् निर्णय करके तुरंत आक्रमण के लिए प्रस्ताव पास कर के अरदास की गयी और नगारा बजा दिया गया। खालसई फ़ौज का एक-एक दस्ता बारी-बारी से महाराजा रणजीत सिंघ के सामने आता और बोले सो निहाल के उत्तर में सति सिर अकाल के जयकारे गजाते हुए आगे से हो कर निकल जाता। महाराजा साहिब बिजली की तरह चमकती सिरी साहिब को हिलाते हुए नगारे की तरह गूँजती आवाज़ में अपने शूरवीरों को रणक्षेत्र में दुश्मन के छक्के छुड़ाने के लिए विदा करते।

अकालियों (निहंग सिंघों) का जत्था निकल चुका था और सरदार देसा सिंघ का जत्था अभी निकल ही रहा था कि जासूस ने खबर दी कि काबुल से शत्रु की सहायता के लिए दस हज़ार सेना तथा चालीस बड़ी तोपें और पहुंच चुकी हैं। सारी दशा का पूरा अंदाज़ लेने के पश्चात् महाराजा साहिब इस निर्णय पर पहुंचे कि आक्रमण का कार्यक्रम दूसरे दिन पर छोड़ दिया जाना चाहिए क्योंकि टकराव सख्त था और शाम तक खालसई तोपख़ाने के पहुँच जाने की आशा थी।

अकाली फूला सिंघ जी को जब यह ख़बर दी गयी कि महाराजा साहिब ने सुबह किये गये निर्णय में कुछ परिवर्तन कर रहे हैं तो आप सीधे महाराजा के पास आ पहुँचे और वीर रस में कहने लगे, **"यह माना कि वैरी आज बहुत ही शक्तिशाली है, पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में अरदास कर के प्रस्ताव पास करने के पश्चात् उसके विपरीत चलना खालसे का असूल नहीं है। "शीश जाये तो जाय पर सतगुरु साहिबान की हज़ूरी में किये गये फ़ैसले की लाज हर कीमत पर रखी जानी चाहिए।"**— अकाली जी, राजनीति से काम लेने में कोई हर्ज़ नहीं। यदि यह हमला एक दिन पश्चात् किया जाये तो क्या अंतर पड़ जायेगा ? हम युद्ध करने से तो पीछे नहीं हट रहे और मैदान में पहुंचेंगे भी अवश्य, पर हालात की दृष्टि में रखते हुए हमारे लिए इतनी उतावली अच्छी नहीं होगी—महाराजा रणजीत सिंघ ने कहा।

"महाराजा साहिब, श्री गुरु साहिब की हज़ूरी में अरदास करके किया गया फ़ैसला हमारा प्रण था कि और किये गये प्रण को तोड़ने के लिए हम किसी मूल्य पर भी तैयार नहीं हैं। चाहे दुश्मन की फ़ौज इस से दस गुना बढ़ भी क्यों न आ जाये और हमें युद्ध में शहीद हो जाना पड़े, परन्तु हम सतगुरु साहिबान की हज़ूरी में किये गये प्रण के पालन के लिए पहले निश्चित कार्यक्रम के अनुसार दुश्मन पर अभी आक्रमण करेंगे और खालसा को वचन पालन का धर्म पूरा करने में मदद देने वाला कलगीधर पिता हमारे साथ है"—अकाली जीं ने भरोसे से कहा।

महाराजा साहिब कुछ गहरी सोच में डूब गये थे और किसी कीमत पर भी तोपख़ाने के बिना आक्रमण करने को तैयार नहीं थे। अकाली जी ने समय जाता देख कर कहा—**"आप महाराजा हैं, जो जी में आये करो। परन्तु हमने तो प्रण पूरा करना है, इसलिए अभी आगे बढ़ेंगे। मैदान में शीश देना पड़ जाये तो परवाह नहीं, पर दुश्मन को अपने देश की इंच भर ज़मीन पर भी पैर नहीं रहने देंगे। हमारे बज़ुर्गों ने न जाने कितने शीश दे कर यहां से अत्याचारी राज्य को समाप्त किया है और कितना ख़ून देकर सरहदी इलाके की ओर से हो रहे हर साल पठानी आक्रमणों का सिलसिला बंद करवाया है। हम अपने बजुर्गों द्वारा की करायी पर हम अपने जिंदा जी पानी नहीं फिरने देंगे।**

रणभूमि में जाने से पूर्व अकाली जी ने जोश में अनियंत्रित हो कर सतगुरु साहिबान के आगे अरदास की। दस सतगुरु साहिबान तथा श्री गुरू ग्रंथ साहिब का चितवन करते हुए कहने लगे—**"हे सतगुरु साहिबान ! ज़ालिम दुश्मन की सेना असंख्य है पर आपका यह खालसा आप जी की शिक्षाओं के अनुरूप उस पापी ज़ालिम तथा अत्याचारी दुश्मन पर चढ़ाई कर रहा है जो हर साल आक्रमण करके इस देश की निर्दोष, निहत्थी जनता का धन-माल, इज्ज़त-आबरू तथा धर्म तक लूटने के पुराने इरादे फिर पूरा करना चाहता है। हे सतगुरु ! हमें शक्ति प्रदान करो ताकि अपने शीशं देकर धर्म के इस राज्य ..... सिख राज्य को, इस मुल्क का इज्ज़त, स्वाभिमान, गैरत आन शान तथा धर्म को बचा सकें। शीश तो उसी दिन आपकी भेंट कर चुके हैं जिस टिन आपका बाणा पहना है और अमृतपान किया है। शीश देने की हमें ज़रा भी चिंता नहीं पर आप के पवित्र नाम की उच्चता को लेशमात्र भी दाग हुआ देखने को हम तैयार नहीं है। अतः कृपा करके अपने खालसा को युद्ध में जूझने का बल प्रदान करो।**

वीर रस भरी इस अरदास ने अकाली फ़ौज के मनों पर वह जादू भरा प्रभाव किया कि अरदास संपूर्ण होते ही सत सिरी अकाल के जयकारों से आकाश गूंज उठा और अकाली फ़ौज मैदाने जंग की ओर चल पड़ी। लआगे से तीस हज़ार गाज़ियों ने जेहाद के जोश तथा अपने भारी संख्य के अहंकार में अंधे हो कर अकाली फ़ौज पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। अकाली फ़ौज भी बिना किसी भय के शूरवीरता तथा दलेरी के साथ आगे बढ़ती जा रही थी ताकि आगे हो कर तलवार से युद्ध किया जा सके। अकाली सिंघ बंदूक, तोप की लड़ाई से तलवार की लड़ाई बहुत पसंद करते थे और उसमें पारंगत भी इतने थे कि इस में उन का कोई मुकाबला नहीं कर सकता था।

अकाली फ़ौज को निर्भीकता पूर्वक आगे बढ़ता हुआ तथा गाज़ियों द्वारा गोलियों

की वर्षा होती देख कर महाराजा भी न रह सका। अपनी फ़ौज को एकदम नी अकाली वीरों की सहायता के लिए पहुँचने के लिए हुक्म दे दिया और स्वयं भी अपनी सेना के साथ हो चला। फिर क्या था, महाराजा की फ़ौज ने उन गाजियों पर हल्ला बोला जो अकालियों को घेरे में लेने का यत्न करने में कामयाब होते नज़र आ रहे थे। अकाली फ़ौज दुश्मन के सामने वाले दस्तों के बिल्कुल सिर पर जा झपटी।

आगे से जेहादी अंधा-धुंध आग बरसा रहे थे। एकाएक गाज़ियों की एक गोली अकाली जी की बाईं टांग को चीरती हुई घोड़े के पेट में जा लगी। गोली लगते ही अकाली जी का घोड़ा गिर गया। अकाली जी बहुत फुर्ती से अपने हाथी पर जा बैठे। अकाली जी ने अपने जत्थे को गुत्थमगुत्था लड़ाई का आदेश दिया। जत्था घोड़ों को छोड़ कर तलवारें सूत कर वैरी पर टूट पड़ा।

अकालियों ने वह तूफानी तलवार चलाई कि गाज़ियों के होश भुला दिये। महाराजा साहिब ने और ताज़ा दम फ़ौज अकालियों की सहायता के लिए भेज दी। वाहिगुरु की कृपा से उधर से खालसाई तोपख़ाना भी मैदान में पहुंच गया। पठानों ने अपने पैर ज़माने के लिए बहुत प्रयास किये परन्तु वे अकालियों की काल रूपी कृपाण के सामने बहुत समय तक नहीं टिक सके। इतने में शहज़ादा खड़क सिंघ भी दस्ता ले कर मदद के लिए पहुँच गगा। सारा दिन काट मार होंती रही। शाम तक गाज़ी भाग उठे।

सूर्य क्या अस्त हुआ था, पठानों के दिल तथा उत्साह ही अस्त हो गये। अकाली फ़ौज शानदार फतेह प्राप्त कर रही थी। अकालियों ने दुश्मन का अच्छी तरह पीछा किया ताकि वे दुबारा इधर मुंह करने की न सोच सकें। इसी समय पर पत्थर की ओट में छिपा हुआ एक कायर पठान, जो सामने आकर तो अकालियों के साथ लड़ नहीं था सकता, अकाली फूला सिंघ जी को अपनी गोली का निशाना बनाने में सफल हो गया। अकाली महां सिंघ ने उस पठान को वहीं पर धराशायी कर दिया और अकाली जत्थे गाज़ियों का पीछा करते हुए काफी दूर तक काट मार कर गये। अंत में खालसा ने मोर्चा फतेह कर लिया। सिखी असूलों के लिए, धर्म तथा न्याय भरे खालसा राज्य को कायम रखने की खातिर तमन्नाएँ ज़िदा रखने के लिए सतगुरु साहिबान की हज़ूरी में किये गये प्रण को शीश दे कर भी पूरा करने वाले अमर शहीद बाबा फूला सिंघ जी का महान् जीवन कौम के नौजवानों में सदा ही धर्म वीरता तथा कुर्बानी के जज्बातों का संचार करता रहेगा। काश ! हमारी कौम तथा इसके नेता इस महान् जीवन से अगवाई ले सकते।

अकाली फूला सिंघ जी का व्यक्तित्व

इससे पहले कि हम अकाली जी के व्यक्तित्व के बारे में कुछ विचार करें, यह समझ लेना चाहिए कि जो गुण अकाली जी को अकाल पुरख ने प्रदान किये थे उनका मुख्य कारण उनका गुरबाणी का प्यार था। गुरबाणी ने ही उनके अंदर निर्भरता, अडोलता, दृढ़ता, तेज-प्रताप, वरियामता, वीरता आदि के गुण भर दिये थे। आप चाहे रणभूमि में होते या डेरे में, प्रभात समय नितनेम के पश्चात् आसा दी वार का नितनेम ज़रूर करते। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सवारी जंग युद्धों में एक हाथी पर साथ ही रखते। जब भी कोई आक्रमण करना होता, अरदास करके हुक्मनामा लेकर चढ़ाई करते। आप जी की सारी उम्र गुरमत प्रचार, अमृत संचार, गुरद्वारों के सुधार तथा खालसा पंथ की सेवा में व्यतीत हुई।

डील डोल :अकाली जी डील डोल में सुन्दर, सुडौल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक थे। शरीर इतना हृष्ट-पुष्ट था कि बड़ी उम्र में भी वे नामी जवानों पर हमले के समय सदा आगे निकल जाया करते थे। आप जी का तेजस्वी चेहरा तथा स्वस्थ्य शरीर देख कर आप जी की आयु का अंदाज़ा लगाना कठिन था।

दृढ़ता : आप जी ज़िन्दगी भर चढ़दी कला में रहे। बड़ी-बड़ी लड़ाइयों के समय भी घबराते नहीं थे। नौशहरे की लड़ाई के समय जब महाराजा साहिब कुछ निराश हुए तब अकाली जी पूर्ण दृढ़ता से गाज़ियों पर टूट पड़े ताकि किये गये अरदासे की महानता कायम रह सके।

शूरवीरता : आप जी द्वारा लड़े गये युद्धों का वर्णन आ ही चुका है, उन में आपने जो शूरवीरता दिखलाई वह वर्णनीय है। मुल्तान की जंग में जो बहादुरी आपने दिखलाई वह तो एक अद्वितीय कारनामा था। तोपों तथा गोलियों की वर्षा में से निकल कर नवाब मुजफ्फ़र ख़ान पर जा झपटने का कार्य कोई बिरला शूरवीर ही कर सकता था।

निर्भरता : अकाली जी दिल की बात प्रकट करने में बहुत बहादुर थे। महाराजा साहिब की जब डोगरों के हाथों नाचते देखा तो आपने मन को भी साफ तथा सच्ची सच्ची बातें कह सुनायीं। जिस समय महाराजा साहिब ने मोरां के संग, जो लाहौर की एक नाचने वाली थी, विवाह करवाया तब अकाली जी ने श्री अकाल तख्त से आप को कोड़ों की सजा दिलवाई।

1806 ई॰ में जिस समय लाहौर दरबार की ओर से मोरां के नामक सिक्के ढाल कर श्री अकाल तख्त साहिब स्वीकृति के लिए आये तो उन्हें यह कह कर अस्वीकार

कर दिया गया कि गुरू साहिबान के या गुरसिखों के नाम के अतिरिक्त और किसी के नाम का सिक्का स्वीकार नहीं हो सकता।

अभिमान रहित : निर्भीक तथा सख्त स्वभाव के होते हुए भी आप जी अभिमान रहित विचरण करते थे। मैदाने जंग में जब भी किसी सिंघ को घायल देखते, उस को अपने कंधे पर उठा कर डेरे में ला कर मरहम पट्टी करते। रणक्षेत्र में जाते समय अपने जत्थे के सिंघों के साथ घोड़े पर ही जाते चाहे उनके पास हाथी आदि की काफी सवारियां होती।

गुरमत प्रचारक : जब भी आप को जंग युद्धों में से कुछ समय मिलता आप गांव-गांव में दौरा करके जनमानस को गुरू के साथ जोड़ते तथा अमृतपान करवाते। खंडा बाटा अमृतपान करवाने के लिए हमेशा अपने साथ ही रखते। जिन-जिन क्षेत्रों में अमृत संचार करते उनका पूरा-पूरा हिसाब रखते। यह कहावत मशहूर है कि एक बार एक सिंघ अमृतपान कर के पतित हो गया। अकाली जी को पता चला तो उस के गांव जा पहुँचे और उसको बुलाया। जब उसने अपशब्द बोलने की जुर्रत की तो अकाली जी ने कहा कि **अमृत की दात जो गुरु गोबिन्द सिंघ जी द्वारा प्रदत्त है, वह व्यर्थ नहीं जाने देनी है, इसलिए तुझे कोल्हू में गाड़ कर जो लहू निकलेगा, हम उसका सेवन करेंगे।** यह सुनते ही वह चरणों में आ गिरा और दुबारा अमृतपान करके तैयार-बर-तैयार हो गया। आप जी ने गुरद्वारों में से मनमत को निकाला।

तेजस्व-प्रताप : जिस समय शाहज़ादा प्रताप सिंघ जींद ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध हो कर आनंदपुर साहिब में आप की शरण ली तो डोगरों के हाथों चढ़ कर महाराजा ने दीवान मोतीराम को आनंदपुर साहिब पर हल्ला बोलने तथा अकाली जी को पकड़ कर लाने का हुक्म दिया तो सिख फ़ौज ने अकाली जी के आगे बिना लड़ाई किये हथियार फैंक दिये। इसी प्रकार जब नाभा के महाराजा जसवंत सिंघ की सेना अकाली जी को पकड़ने के लिए, आनंदपुर साहिब पहुँची तो फ़ौज ने भी अकाली जी घेरा डालने से मना कर दिया। यह सब उनके गुरमुख जीवन तथा तेज प्रताप के फलस्वरूप ही था।

गुरबाणी का सम्मान : चाहे गुरबाणी का पढ़ना तथा उसके अनुसार जीवन ढालना तथा आम लोगों तक उस का प्रचार करना अकाली जी का मुख्य जीवन मनोरथ था परन्तु गुरबाणी का सम्मान भी कोई कोई, मर मर कर जीने वाले निभा सकते हैं। अंग्रेज़ों का सफर मिस्टर मिटकाफ जब 1808 ई० में अमृतसर महाराजा साहिब के साथ सीमाबंदी करने के लिए आया तो शिया मुसलमानों द्वारा जो उसके

दस्ते में थे, मुहर्म के अवसर पर उनका जलूस श्री अकाल तख्त के पास से निकाल। सिखों ने देखा कि उनके कीर्त्तन में विघ्न पड़ रहा है। सिखों के समझने पर वे मना न हुए तो झगड़ा होने पर जो तलवार अकाली सिघों ने चलाई, वह गुरबाणी के सम्मान की ज़िंदा मिसाल है।

प्रबंधक : जहां आप एक गुरबाणी के रसिये थे। वहीं आप जी एक कामयाब प्रबंधक भी थे। जब से आप जी ने निहंग सिघों की जत्थेदारी संभाली किसी भी सिंघ ने आप जी के विरुद्ध होने की जुर्रत नहीं की। अकाली सिंघों को कंट्रोल में रखना कोई मालूमी कार्य नहीं होता। इसके अतिरिक्त पेशावर की विजय के समय तथा कश्मीर की विजय के समय जो राजनैतिक प्रबंध आपने किया वह भी आने वाली नस्लों के लिए एक अच्छी पद चिन्ह स्थापित करता है।

कौमी प्यार : कौमी दर्द अकाली जी की रगों में कूट-कूट कर भरा हुआ था। कौम की चढ़दी कला के लिए आप जी ने अनेकों कष्ट सहे। यहां तक कि आप अपना शीश भी कौम की भेंट करके शहीद हुए। **आज कौम, आप जैसे जरनैलों की नेतृत्त्व में चलने की लालायित है।** ■

१ੴ वाहिगुरू जी की फतहि।।

सिख मिशनरी कालेज का उद्देश्य

हम सिख हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि हमें सिखी असूलों(नियमों) का पता हो, गुरबाणी के अर्थ भाव, सिख इतिहास की जानकारी, सिख रहित मर्यादा के असूल सिख फिलासफी, सिख सभ्यता की हर गुरसिख को जानकारी होनी अति आवश्यक है। यदि हमें इनका ज्ञान नहीं हो हम कैसे सिख कहला सकते हैं ? पाठ हम करते जा रहे हैं, पर यदि कोई हमसे गुरबाणी के किसी वाक्य का अर्थ पूछ ले और हम जवाब न दे सकें तो यह हमारे लिए कितनी शर्मनाक बात होगी। दस गुरू साहिबों एवं प्राचीन गुरसिखों के इतिहास की जानकारी होनी आवश्यक है, यदि हम अपना बेमिसाल इतिहास नहीं जानते तो हम कैसे दूसरे को बता सकेंगे कि हम कौन-सी विरासत के मालिक हैं। सिख रहत् मर्यादा के उसूल कौन-कौन से हैं, इस विषय पर हम आमतौर पर अज्ञानी हैं। घर में पाठ रखना हो या जीवन में कोई संस्कार करना हो, गुरमत क्या है, इसे जानने के लिए हमें ग्रंथी सिंघों या ज्ञानी व्यक्ति पर निर्भर होना पड़ता है। पर क्या सिख होते हुए ऐसे असूलों की जानकारी हमें स्वयं को होनी ज़रूरी नहीं ?

आज हम देखते हैं हमारे में जो कमज़ोरियां आ रही हें, उसका मुख्य कारण यही है कि हमने सिखी के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की ज़िमेवारी नहीं समझी। यदि हमें गुरसिखी के असूलों का स्वयं ज्ञान हो तो हम अपने नौजवानों को जो अनजाने में दाड़ी व केशों की बेअदवी कर रहे हैं, नशे पी रहे हैं, देहधारी पाखंडी गुरूओं को मान रहे हैं, को गुरबाणी के उसूल दृढ़ करवा कर, खून से लिखा अपना बलिदानी इतिहास सुना कर सिख धर्म की ओर प्रेरित कर सकते हैं। जो नौजवान आज बागी हो रहे हैं तो इसमें उन बेचारों का क्या दोष ? दोष तो हमारा अपना है, हमारे प्रचारकों का है, हमारी अगवाई करने वालों का है जो ऐसे नौजवानों को सिख धर्म की ओर नहीं प्रेरित कर सकें।

आज ना तो सिखी हमें माता-पिता से, घर से ही मिल रही है (क्योंकि माता-पिता ही सिखी से दूर हो चुके हैं तथा मादा प्रस्ती में बुरी तरह उलझे हुए हैं) व ना ही सिखी 'खालसा' स्कूलों, कालेजों से ही मिल रही है, क्योंकि किसी स्कूल या कालेज को छोड़कर सिखी के संदेश देने का प्रबंध हम इनमें कर ही नहीं सके या किया ही

नहीं, जहां पहले खालसा, स्कूलों कालेजों में होता था। गुरद्वारों में से सिखी की शिक्षा मिलनी चाहिए थी क्योंकि गुरुद्वारे बने ही सिखी का प्रचार करने के लिए, पर आज गुरुद्वारों में फैली गुटबाजी, पार्टीबाजी गुरुद्वारे पर कब्ज़े की भूख, गोलक (गुरूद्वारे में चढ़ाए हुए धन) की लड़ाई, नौजवानों के मार्ग में बाधा बनी हुई हैं, जिस कारण वह गुरूद्वारों में हो रहे धर्म प्रचार को नहीं स्वीकारते। फिर जो प्रचारक हमने अपने धर्म स्थानों में लगा रखे हैं, उनमें से बहु-गिनती अनपढ़ हैं। यदि हमारे बहुत सारे प्रचारकों की, ना स्कूली शिक्षा हो, ना वह धर्म के क्षेत्र में पूरा ज्ञान रखते हों, ना हि उच्च महान् जीवन, ना ही प्रचार के लिए मिशनरी उत्साह हो तो फिर यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि ऐसे प्रचारक नौजवान पीढ़ी पर अपने प्रचार का अच्छा प्रभाव डाल सकेंगे। सत्य तो यह है कि प्रचारकों का यह क्षेत्र केवल एकमात्र माया कमाने का एक साधन बना कर रख दिया गया है, व प्रचार का वास्तविक उद्देश्य अलोप होता जा रहा है।

जब हम दूसरे धर्मों ईसाई मत, इस्लाम मत आदि की ओर देखते हैं तो उनके प्रचारक व प्रचारक तैयार करने वाली संस्थाएं (अदारे) देख कर दंग रह जाते हैं कि कैसे उन्होंने ग्यारह सालों का लम्बा समय लगाकर लाखों कि गिनती में प्रचारक तैयार किए हैं व प्रचार के क्षेत्र में उन्हें पूरी तरह तैयार किया है। पर जब हम अपने प्रचारकों की ओर देखते हैं तो असहाय से होकर रह जाते हैं क्योंकि हमारे प्रबंधकों ने प्रचारकों की तैयारी के लिए कोई बड़े संगठित व योग्य मिशनरी कालेज नहीं खोला, जहां प्रचारकों को सिख धर्म की पूरी शिक्षा देकर तैयार करके प्रचार के क्षेत्र में भेजा जा सके। योग्य प्रचारकों की कमी कारण ही हमारा धर्म जो दुनिया का सबसे बढ़िया व आलमगीर धर्म है। जो हर देश, प्रदेश में, बिना किसी जात-पात, अमीर-गरीब, वर्ग भेद, रंग रूप आदि बिना भेदभाव प्रचार किया जा सकता है, संसार में तो क्या पंजाब में भी सही ढंग से नहीं प्रचार सका

उपरोक्त कमी को महसूस करते हुए 'सिख मिशनरी कालेज' आरम्भ किया गया है, जिस द्वारा 'दो साला सिख मिशनरी कोर्स (Correspondonce Course) करवाने का प्रबंध किया गया है। पढ़े-लिखे नौजवान, इस दो साला सिख मीशनरी कोर्स करने के बाद (Elementry Sikh Missionaries)के तौर पर कार्य करेगें। यह गुरमति प्रचारक अपनी कार्य करते हुए प्रचार का काम (Part time) में बिना किसी प्रकार की तन्खाह फल आदि के करेंगे।

सदा याद रखें

1. सिख ने केवल एक अकाल पुरख के नाम का ही सिमरन करना है जो सब को पैदा करने वाला, पालने वाला और मारने की ताकत रखता है।

2. गुरू ग्रंथ साहिब के बिना और किसी देहधारी को गुरु नहीं मानना और न ही किसी के आगे माथा टेकना है।

3. सिख ने सुबह जल्दी उठ कर स्नान करके, वाहिगुरू का सिमरन करना है और फिर गुरबाणी का पाठ (नितनेम) करना है।

4. गुरबाणी का पाठ करते समय जल्दी नहीं करनी चाहिए। प्यार, आदर से मन लगा कर, समझ विचार कर, शुद्ध पाठ करना चाहिए।

5. गुरसिख ने प्रतिदिन गुरूद्वारे जा कर कीर्तन, कथा सुन कर लाभ उठाना है। सिख के लिए धार्मिक स्थान केवल गुरूद्वारा ही है, और कोई नहीं।

6. सिख ने एक दूसरे को मिलते समय वाहिगुरू जी का खालसा, वाहिगुरू जी की फतहि ही कहना है।

7. गुरबाणी की पोथी, गुटके आदि को रूमाल में लपेट कर आदर से रखना है और गन्दे हाथ नहीं लगाने।

8. सिख ने हमेशा अपना नाम सिंघ या कौर शब्द के साथ पूरा लिखना है। नाम के साथ जात नहीं लिखनी चाहिए।

9. सिख धर्म में प्रभु के नाम सिमरन को ही सच्चा तीर्थ माना गया है। और तीर्थ यात्रा और तीर्थ स्थानों का सिख धर्म में कोई स्थान नहीं है।

10. सिख ने ऐतिहासिक गुरूद्वारों के दर्शनों के लिए जाना है ताकि सिख इतिहास की जानकारी हो सके और अपने बहुमुल्लय विरसे के बारे में जान सकें।

11. सिख ने कुश्तीयां तथा और खेलों में बढ़ चढ़ कर हिस्ता लेना है, परन्तु गंदी फिल्में और गंदे नाटक, जिनमें गंदे सीन दिखाये जाते हैं, से दूर रहना है।

12. सिख ने कभी भी, किसी प्रकार का नशा (शराब, भंग, अफीम, चरस, तंबाकू, सिगरट, स्मैक)आदि का प्रयोग नहीं करना।

13. सिख लड़कियों के लिए नाक, कान छेदना और नाक, कान में गहने पहनने सिख रहत मर्यादा के अनुसार गलत है। सिख स्त्रियों के लिए घुंघट निकालना मना है।

14. सिख स्त्रियों के लिए घुंघट निकालना मना है।

15. सिख पुरुष और स्त्रीयों के लिए सिर ढ़के बिना बाजारों में घूमना और नंगे सिर रहना विवर्जित है। केशों के आदर के लिए हर समय दसतार या चुंनी से केश ढ़कने चाहिए।